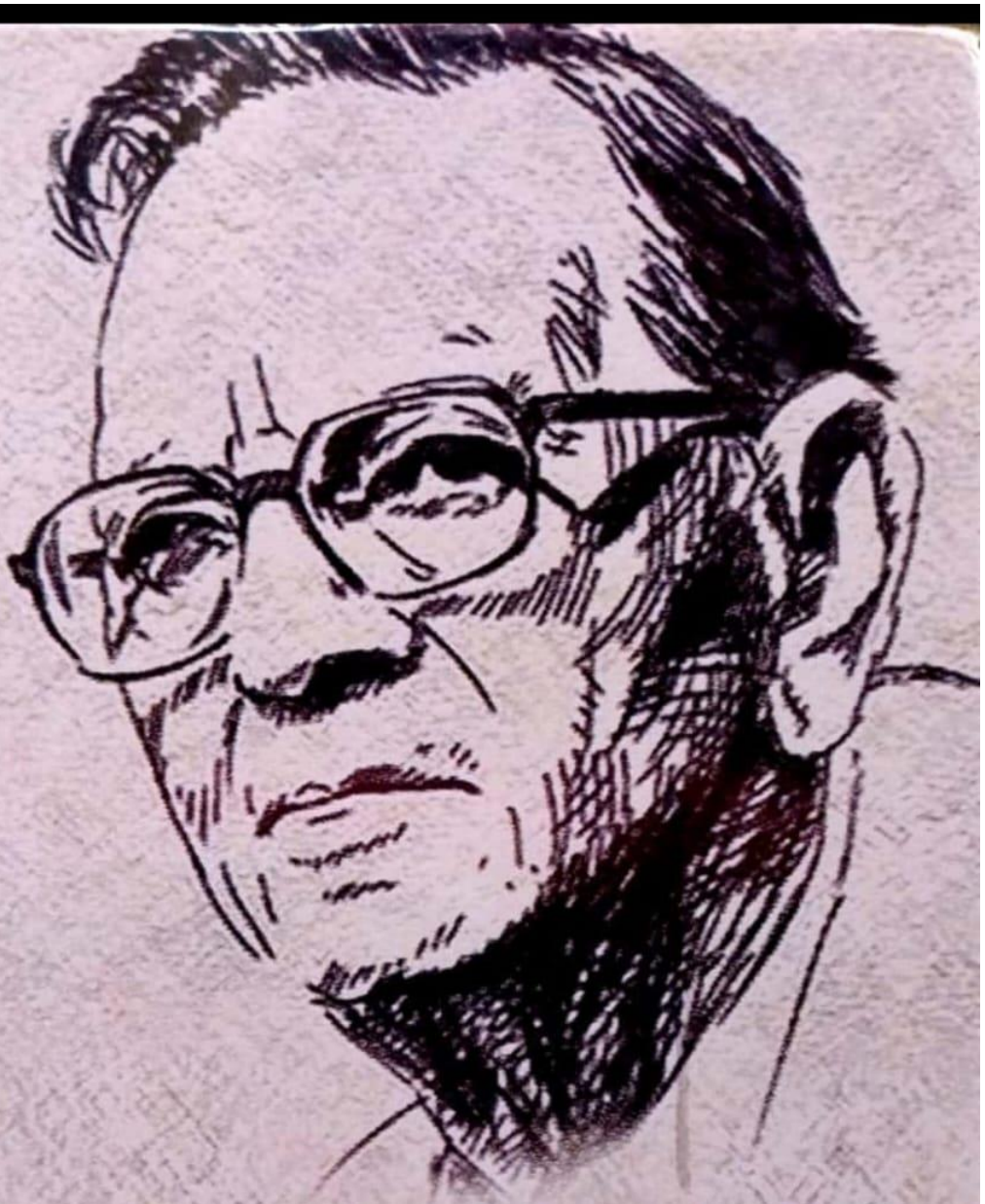

कुँवर नारायण के खंडकाव्य

विशेषण और क्रिया की दृष्टि से अध्ययन

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

कुँवर नारायण के खंडकाव्य

विशेषण और क्रिया की दृष्टि से अध्ययन

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
दिल्ली

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी

के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
फोन : 9968084132, 7982062594
e-mail : arpublishingco11@gmail.com

KUNWAR NARAYAN KE KHANDKAVYA
by Dr. Akshay Rajendra Bhosale

ISBN : 978-93-94165-27-4
Linguistics

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 575

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

अनुक्रम

1.	कवि कुँवर नारायण और उनके खंडकाव्य	15
2.	विशेषण तथा क्रिया का पद् च्छेदन	60
3.	'आत्मजयी' में अभिव्यंजित विशेषणों का अध्ययन	84
4.	'वाजश्रवा के बहाने' में अभिव्यंजित 'विशेषणों' का अध्ययन	112
5.	'आत्मजयी' में अभिव्यंजित 'विशेषणों' एवं 'वाजश्रवा के बहाने' में अभिव्यंजित 'विशेषणों' का तुलनात्मक अध्ययन	139
6.	'आत्मजयी' में अभिव्यंजित 'क्रिया' का अध्ययन	143
7.	'वाजश्रवा के बहाने' में अभिव्यंजित 'क्रिया' का अध्ययन	176
8.	'आत्मजयी' में अभिव्यंजित 'क्रिया' एवं 'वाजश्रवा के बहाने' में अभिव्यंजित 'क्रिया' का तुलनात्मक अध्ययन	233
	संदर्भ ग्रंथ सूची	236

कवि कुँवर नारायण और उनके खंडकाव्य

साहित्यिक रचना को समझने के लिए रचनाकार के व्यक्तित्त्व से परिचित होना आवश्यक है। रचनाकार का जन्म, उसका परिवेश, शिक्षा-दीक्षा, संस्कार आदि का प्रभाव लेखन पर होता है। रचनाकार किन सामाजिक घटनाओं से प्रभावित हैं एवं उसके लेखन की प्रेरणाएँ क्या हैं? इसे समझने से रचनाओं का मूल्यांकन आसान हो जाता है। रचनाकार के जीवन का प्रतिबिंब ही रचनाओं में दिखता है। कवि कुँवर नारायण केशब्दों में "बिना प्रामाणिक जीवनानुभव का अच्छा काव्यानुभव दे पाना संभव नहीं है। जीवनानुभव को सीमित अर्थ में न लें! दोनों के बीच विभाजन या फाँक नहीं होती है। मैं उन्हें संयुक्त मानता हूँ'[1] रचनाकार का जीवन परिचय रचनाओं के मूल्यांकन का मार्ग प्रशस्त करता हैयही कारण है कि हम प्रस्तुत अध्याय में कवि कुँवर नारायण के जीवन परिचय को जान लेंगे।

कवि कुँवर नारायण प्रतिभा संपन्न एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। एक संपूर्ण साहित्यकार के रूप में उन्होंने कविता, कहानी, समीक्षा, अनुवाद आदि क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है। उनका जीवन परिचय निम्न मुद्दों के आधार पर समझा जा सकता है-

कुँवर नारायण : परिचय

जन्म एवं मृत्यु

कुँवर नारायण का जन्म दिनांक 19 सितंबर, 1927 को अयोध्या के नजदीक फैजाबाद में हुआ। कवि का साहित्यिक सफर 51 साल का रहा है, तो संपूर्ण आयु 90 साल की प्राप्त हुई है। उनकी मृत्यु दिनांक 15 नवंबर,2017 को दिल्ली में हुई।

बचपन

फैजाबाद में जन्में कवि कुँवर नारायण का बचपन ज्यादातर लखनऊ में बीता है। वे फैजाबाद में कुछ ही दिन रह पाए, क्योंकि क्षयरोग की महामारी में सन् 1939 में उनकी माँ

---

1. संपा. विनोद भारद्वाज, तट पर हूँ तटस्थ नहीं - कुँवर नारायण की भेंट वार्ता, पंकज चतुर्वेदी– जीवन का दबाव अब ज्यादा है, पृ. 47

का देहांत हुआ। परिवार में सबसे छोटी संतान कुँवर नारायण ही थे। उन्हें माँ का प्यार देनेवाली उनकी बड़ी बहन भी कुछ ही दिनों में दिवंगत हो गई। इस घटना के कारण कवि मृत्यु एवं अकेलेपन से पुनः एक बार वाकिफ हो गए। इस तरह कवि का बचपन विचित्र परिस्थितियों में बीता है। वे कहते हैं, "इस पारिवारिक ट्रेजडी ने जरूर मुझे बचपन में ही बहुत अकेला कर दिया। हम कई चचेरे भाई-बहन एक साथ पल गए। सब साथ, पर बहुत अलग भी।"[2] कुँवर नारायण के चाचा लखनऊ में रहते थे। वे उन्हें अपने साथ वहीं ले गए।

कवि कुँवर नारायण के काव्य में माँ के प्यार की लालसा, मृत्यु, भय, जिज्ञासा अर्थात् बचपन की अनुभूतियों की गरिमामय झाँकियाँ प्राप्त होती हैं। उनका बचपन माँ और बहन की मृत्यु के कारण भले ही तनाव में गुजरा, किंतु आजादी के आंदोलन में सक्रिय रहे उनके चाचा एवं परिवार के उचित संस्कार उनके लिए एक वैचारिक व्यक्तित्व की नींव बनाता रहा है।

शिक्षा

कुँवर नारायण की शिक्षा लखनऊ में उनके चाचा के यहाँ पूरी हुई। अध्ययन के दौरान ही आचार्य नरेंद्र देव के संपर्क में आने के कारण दर्शन में उनकी रुचि बढ़ती गई। वे कहते हैं, "वर्ष 1946 - जुहू (बंबई) में आचार्य नरेंद्र देव के साथ समाजवाद मार्क्स और बौद्ध धर्म पर उनकी बातें सुनना मेरे लिए मेरी शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभावी अनुभव रहा।"[3]

कुँवर नारायण विज्ञान के छात्र थे, परंतु साहित्य के प्रति रुचि होने के कारण उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। एम. ए. की पढाई के दौरान उनकी गहरी मित्रता कवि रघुवीर जी सहाय के साथ थी। इसी दरमियान अज्ञेय जी का काव्य संग्रह 'हरी घास पर क्षण भर' प्रकाशित हुआ था। ये कविताएँ सुनकर कुँवर नारायण को लगा कि उनकी अपनी रुचि भी इसी ओर है। एम. ए. की पढाई के दौरान ही उन्होंने कई अंग्रेजी रचनाकारों को पढ़ा एवं समझा भी। उन्होंने संत साहित्य से ज्यादा संतों के जीवन को अधिक पढ़ा। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा के दौरान भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य तथा दर्शन का प्रभाव कवि कुँवर नारायण पर पड़ा।

विवाह एवं घर परिवार

कुँवर नारायण का विवाह सन् 1966 में भारती गोयनका के साथ हुआ। विवाह से पहले वे एक-दूसरे से परिचित थे। एकदूसरे के विचारों एवं दृष्टि से परिचित होने के कारण सहचारी के रूप में वे दोनों ही एक-दूसरे के लिए पूरक थे। कवि के शब्दों में "न जाने क्यों मेरी कोई भी कृति जब पूरी होने के निकट आती है, तब मैं बेहद नर्वस अनुभव करता हूँ। ऐसे वक्त

2. कुँवर नारायण, दिशाओं का खुला आकाश (डायरी एवं नोटबुक से कुछ पृष्ठ). 169
3. वही, पृ. 16

मैंने भारती के सहयोग को बहुत मूल्यवान पाया है। वह मेरी हिम्मत को टूटने नहीं देती... कुछ इस तरह उसमें अपनी हिम्मत को शामिल कर देती है कि मेरे लिए आगे बढ़ना लाजिम हो जाता है। यह एक ऐसी 'निर्भरता' है जो मेरी 'आत्मनिर्भरता' को पुष्ट करती है।"[4] बेटे अपूर्व के विदेश से लौटने के पश्चात् वे लखनऊ छोड़कर दिल्ली में रहने लगे। वे लिखते हैं, "मैं ऐसी संकरी और तंग गली से, मकानों की एक बहुत बड़ी भीड़ से, बिजली या टेलीफोन के तारों से उलझे आसमान से एवं हरियाली के अभाव से जूझते अपने मुहल्ले से बाहर निकलने की भारी कोशिश में हूँ।"[5] स्पष्ट है कि कवि को जीवन जीने का तरीका सहज एवं खुले किस्म का पसंद है, न कि घुटनभरा। फिर भी वे जीवन के अंतिम दिनों तक दिल्ली में ही रहे। बेटे अपूर्व के साथ वे हमेशा खुश रहते थे।

विदेश यात्राएँ

कुँवर नारायण के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालनेवाली अनेक घटनाओं में विदेश यात्राओं का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। कवि ने सन् 1955 ई. में पोलैंड चेकोस्लोवाकिया, रूस, चीन की यात्रा की है। इस बीच वॉर्सा में नाज़िम हिकमत, एंटन स्वानीम्स्की, पाब्लो नेरुदा से मुलाक़ात का विशेष अनुभव प्राप्तहुआ। इसी तरह वे स्वीडन के स्टाकहोम, गोथेनबर्ग एवं लुण्ड विश्वविद्यालय, बेनिस विश्वविद्यालय, ब्रिटेन, इटली, अमेरिका, नेपाल, पोलैण्ड आदि देशों की अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक गतिविधियों के दौरान यात्राएँ कर चुके हैं। यात्राओं के अनुभवों को लेकर उनका कहना है "नई-नई जगहों में घूमते हुए अक्सर मुझे एक अजीब-सी अनुभूति होती है - मानों मेरे जीवनानुभवों का वृत्तांत अलगअलग समयों में, अलग-अलग जगहों में, अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग व्यक्तियों से कुछ एक ही तरह से लिखा जा चुका है।"[6] जब-जब कवि ने विदेश यात्राएँ की तब-तब वहाँ के अनुभवों ने उनके व्यक्तित्व को समृद्ध बनाया है। इस अनुभूति को वे अपनी कविता में शब्दबद्ध करते हैं -

> *"अंतिम दिन / भाषा और भाषा के अभेद से उत्पन्न वे /*
> *दिखे मुझे / जीवन की आत्मकथा /*
> *जो किसी भी देश किसी भी काल में / लिखी और पढ़ी जा सकती है /*
> *जिसके लिए कहीं भी जन्म ।*
> *कहीं भी मृत्यु संभव है / जो किसी भी प्रस्तावना से पहले /*
> *या उपसंहार के बाद / यातायात शुरू हो सकती है ।"*[7]

4. कुँवर नारायण, दिशाओं का खुला आकाश (डायरी एवं नोटबुक से कुछ पृष्ठ). 130
5. वही, पृ. 18
6. वही, पृ. 18
7. वही, इन दिनों, पृ. 36

संदर्भग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. नारायण कुँवर,आत्मजयी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, आँठवा संस्करण - 2008
2. नारायण कुँवर,वाजश्रवा के बहाने, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2008

सहायक ग्रंथ

1. अग्निहोत्री रमाकांत, (अनुवादक : अनुशब्द), हिंदी एक मौलिक व्याकरण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2013
2. 'आदेश' हरिशंकर, शकुंतला, शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1997
3. कपूर बदरीनाथ, हिंदी क्रियाओं की रूपरचना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण - 2012
4. गुरु कामताप्रसाद, हिंदी व्याकरण, मलिक एंड कंपनी, जयपुर, प्रथम संस्करण 2011
5. संपा. चतुर्वेदी गीत, लेखक का सिनेमा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2017
6. चौधरी तेजपाल, हिंदी व्याकरण विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृत्ति- 2011
7. जैन पी. सी., हिंदी प्रयोग, एक शैक्षिक व्याकरण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, आवृत्ति - 2012
8. जैन वृषभ प्रसाद, अनुवाद और मशीनी अनुवाद, सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1995
9. डॉ. टंडन पूरनचंद अनुवाद एवं संचार राजपाल एंड संज कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण - 2014
10. नारायण कुँवर, शब्द और देशकाल, राजकमल प्रकाश संस्करण - 2013
11. नारायण कुँवर, इन दिनों, राजकमल प्रकाशन, नई दिल 2002
12. संपा. निश्चल ओम, अन्विति, साहित्य के परिसर में, दो, कृतियों पर एकाग्र लेखन, राजकमल प्रकाशन, संस्करण - 2018
13. निगमानंद परमहंस डॉ. चंद्रकांता हिंदी का मौलि प्रकाशन, साहिदाबाद, संस्करण - 2003
14. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', अद्यतन भाषाविज्ञान, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण - 2017
15. पाण्डेय कैलाश नाथ, प्रयोजनमूलक हिंदी की नई प्रकाशन, इलाहाबाद, पुनर्मुद्रण -2014
16. प्रसाद जयशंकर, कामायनी, भारती-भंडार, लोडर प्रे संस्करण-2015
17. प्रसाद धनजी, भाषाविज्ञान का सैद्धांतिक अनुप्रयुक्त प्रिय साहित्य सदन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2011
18. प्रसाद धनजी, सी. शार्प प्रोग्रामिंग एवं हिंदी के भ संस्था, नई दिल्ली प्रथम संस्करण- 2012
19. प्रसाद धनजी, भारती रणजीत, पाण्डेय प्रवीण कुमार प्रिय साहित्य सदन, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2014
20. प्रसाद धनजी, हिंदी का संगणकीय व्याकरण, रा दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2019
21. बंसल राम, कम्प्यूटरी सूचना प्रणाली विकास, वाणं प्रथम संस्करण - 2017
22. बंसल राम 'विज्ञानाचार्य', कम्प्यूटर क्या, क्यों और नई दिल्ली, आवृत्ति - 2012
23. बंसल राम 'विज्ञानाचार्य', प्रारंभीम कंप्यूटर शिक्षा - 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्क
24. ब्रजमोहन, विशेषण - प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नई दि 2014

डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले

जन्म : 08 अगस्त, 199, कदमवाडी, तहसील-करवीर, जिला-कोल्हापुर, महाराष्ट्र

शिक्षा : सेट (हिंदी), एम.ए.हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी), अनुवाद पदविका, संगणक तथा भारतीय भाषा सॉफ्टवेयर्स अनुप्रयोग पदविका। Diploma in Computer Application

प्रकाशन : अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान और पद्‌चोदन, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विविध पत्र-पत्रिकाओं में शोध निबंध प्रकाशित।

विशेष : अनेक राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध निबंध प्रस्तुत एवं सक्रिय सहभाग, विविध कार्यशाला, केंद्र शासकीय एवं अशासकीय, विविध संस्थाओं में विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित।

ब्लॉगर के रूप में सक्रिय : हिंदी साहित्य और भाषा प्रौद्योगिकी

http://www.blogger.com/profile/04242142440219934814

यू-ट्यूबर के रूप में सक्रिय :

'AkshayGyan.'https://youtu.be/2Lolut6G9STU

संप्रति : अभ्यागत अध्यापक, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) - 416004

संपर्क : घर नं. 137, गणेश गली, कदमवाडी, तहसील-करवीर, जिला-कोल्हापुर, महाराष्ट्र-416005

भ्रमणध्वनि : 9022621706, 8805791792

ई-मेल : akshaybosale@gamil.com